National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016;1(5): 16-18
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.विवेकानंद उपाध्याय,
हिंदी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर, मध्य प्रदेश

Correspondence:
डॉ.विवेकानंद उपाध्याय,
हिंदी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर, मध्य प्रदेश

प्रेमचंद की कथा- भाषा और कफन

डॉ.विवेकानंद उपाध्याय

प्रेमचंद हिंदी कथा साहित्य में मील के पत्थर की तरह हैं। उनकी कथा भाषा भी उसी तरह हिंदी कथा भाषा की विकास परंपरा में उपस्थित है। हिंदी कथा आलोचना में कथा भाषा का विश्लेषण कभी भी केन्द्र में नहीं रहा है। वैसे तो, हिंदी में अभी भी कथा आलोचना की कोई व्यवस्थित प्रविधि विकसित नहीं हो पायी है।इसलिए कथा आलोचना में कथा-भाषा के आधार को स्थापित करना एक अनिवार्य आवश्यकता है, क्योंकि भाषा ही वह एकमात्र विश्वसनीय साधन है किसी कृति के मूल्यांकन का। साहित्य में भाषा का रूप प्रायः आम बोलचाल की भाषा से भिन्न होता है लेकिन प्रेमचंद के साथ ऐसा नहीं है। लेकिन भाषा एक अर्जित संपत्ति होती है जिसे हर किसी को कमाना पड़ता है। भाषा में शब्द चयन और वाक्य का रचाव ये दोनों ही स्तर रचनाकार के लिए चुनौती पूर्ण होते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हिंदी की शब्द संपदा के स्रोत संस्कृत (तत्सम),हिंदी (तद्भव), देशज भारतीय भाषाओं के शब्दों से लेकर विदेशज अर्थात् अरबी,फारसी, तुर्की और अंग्रेजी तक हैं। प्रेमचंद जिस युग संधि पर खड़े थे वह हिंदी के एक साहित्यिक भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में विकास का युग था। खुद प्रेमचंद के ही युग में दो तरह की साहित्यक भाषाएँ चल रही थीं कविता में छायावादी काव्य आंदोलन और कथा में प्रेमचंद की भाषा का अंतर साफ देखा जा सकता है। चूँकि गद्य जीवन संग्राम की भाषा के रूप में विकसित हो रहा था, इसलिए उसमें बोलचाल की भाषा के गुण स्पष्ट दिखायी देते हैं। खुद प्रेमचंद की भाषा भी कोई एक चीज नहीं है। वह भी समय के साथ बदलती रही है या विकसित होती रही है।उनकी आरंभिक कहानियों की भाषा और विषयवस्तु की तुलना अगर हम उनके बाद के कथा साहित्य से करें तो बात स्पष्ट हो जायेगी। यह विकास यात्रा केवल भाषा की विकास यात्रा नहीं है बल्कि संवेदना की भी विकास यात्रा है।

कथा-भाषा और काव्य-भाषा का अध्ययन मूलतः भाषा में घट रही उस घटना को समझना होता है जो साहित्यिक कृति के रूप में सामने आती है। साहित्य मूलतः भाषा का ही एक विशिष्ट रूप है।सामान्य रूप में मार्मिक भाषा को ही साहित्य कहा जा सकता है।साहित्यिक कृति के अध्ययन का वस्तुगत आधार उस कृति की भाषा ही होती है। भारत में कथा की परंपरा बहुत ही प्राचीन रही है। आधुनिक कथा चाहे उपन्यास हो या कहानी पारंपरिक कथा से केवल तंत्रगत ढंग से ही भिन्न नहीं होती है बल्कि उसमें रूपगत और अंतर्वस्तु के स्तर पर भी अंतर होता है।

बोलचाल की भाषा के अकादमिक या संस्कारित रूप दो प्रकार के होते हैं। पहला शास्त्र या विज्ञान की भाषा और दूसरा साहित्य की भाषा। साहित्यिक भाषा में भी गद्य और पद्य दो रूप होते हैं।आधुनिक काल में गद्य अपनी सामाजिकता के कारण पूर्व काल के पहले से ज्यादा प्रमुख हो गया। निराला ने गद्य को जीवन संग्राम की भाषा कहा है। प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि कॉलरिज ने गद्य को पदों या शब्दों का सही क्रम कहा वहीं कविता को उत्कृष्टतम शब्दों का सबसे सही क्रम कहा है। उपर्युक्त परिभाषा कविता को भाषिक आधार पर स्पष्ट करती है। कविता में शब्दों का सही शब्द ही नहीं बल्कि उनका सही क्रम भी अपेक्षित होता है। उसका कारण यह है कि कविता बिंबों, प्रतीकों, अलंकारों इत्यादि से बनती है और उसमें शब्द प्रायः विकल्पहीन होते हैं। कथा के दो रूप होते है। उपन्यास और कहानी। कहानी में एक घटना, एक पात्र और एक स्थिति पायी जाती है जबकि उपन्यास जीवन को बहुलता, विस्तार तथा गहराई से चित्रित करता है। उपन्यास घटनाओं, स्थितियों, वर्णनों एवं पात्रों से निर्मित होता है। उपन्यास में पूरे जीवन का चित्र होता है। इस विस्तृत फलक को संपूर्णता से चित्रित करने के लिए संश्लिष्ट भाषा की आवश्यकता होती है। आधुनिक कथा का संबंध आधुनिकता और यथार्थ से होता है।

इसलिए कथा के विश्लेषण में भाषा और यथार्थ के संबंध का विवेचन महत्वपूर्ण हो जाता है। कथाकार से यह अपेक्षा नहीं होती कि वह यथार्थ का संप्रेषण जस का तस करे। उसका कार्य यह है कि वह उस यथार्थ को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करे जिससे पाठक का साधारणीकरण हो सके। प्राचीन काल की कहानियों में पात्रों एवं घटनाओं की नियति तथा रूपरेखा तय होती थी। बाहरी घटनाएँ तथा कारण उसको दिशा देते थे लेकिन उसकी मंजिल तय होती थी। पात्र के अंतःकरण में क्या घट रहा है इसका पता नहीं चलता था। कथाएँ किसी संदेश की वाहक बनकर आती थीं।लेकिन आधुनिक युग के पात्र बाहर से नहीं बल्कि भीतर से संचालित होते हैं।ये पात्र कुछ कर सकने या न कर पाने की शक्ति के वैशिष्ट्य से प्रतिष्ठित नहीं होते बल्कि कुछ भी करते या न करते हुए उनके भीतर क्या कुछ घट रहा है यह महत्वपूर्ण होता है। मुहम्मद हसन अस्करी ने ठीक लिखा है," अदब को इस बात में दिलचस्पी नहीं कि कौन जुल्म करता है और कौन नहीं करता है- जुल्म हो रहा है या नहीं हो रहा- अदब तो यह देखता है कि जुल्म करते हुए और जुल्म सहते हुए इंसानों का खारजी (बाह्य) दाखिली (आंतरिक) रवैया क्या होता है? "[i]

मनुष्य के अंतर्जगत को साहित्य वह भी कथा साहित्य के दायरे में लाना एक मुश्किल कार्य है। अज्ञेय ने इस समस्या पर विचार करते हुए कहा कि कथा साहित्य में साहित्यिक भाषा के प्रयोग की एक सीमा है। वे कहते हैं,"कथा साहित्य में साहित्यिक भाषा का प्रयोग नहीं चल सकता यह बात तो उपन्यास के विकास के प्रारंभिक युग में ही स्पष्ट हो गयी थी। लेकिन उस समय इसके निराकरण के लिए जहाँ-तहाँ प्रादेशिक भाषाओं को अथवा प्रादेशिक, आंचलिक, जातिगत, व्यसायगत अथवा वर्गगत शब्दों, मुहावरों और व्याकरणिक भिन्नताओं को कथोपकथन में ले आना ही पर्याप्त समझा जाता था। जैसे-जैसे उपन्यास के क्षेत्र का विस्तार बढ़ा और कथा में सामाजिक परिवर्तनों के सूक्ष्मतर पर्यवेक्षण की प्रवृत्ति बढ़ी, वैसे-वैसे यह स्पष्ट होता गया कि ऐसे उपाय नाकाफी हैं और समस्या पर और गहराई से विचार करना होगा"[ii] कथा आलोचना के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर डेविड लॉज ने भी कथा साहित्य के सृजन और आलोचना की कुछ समस्याओं पर विचार करते हुए कहा है कि कथा साहित्य के अध्ययन में भी भाषिक प्रयोग के कौशल की परीक्षा आवश्यक है। वे कहते हैं, " हम साधारणतया उपन्यासकार के भाषा प्रयोग की तुलना में कम जागरूक रहे हैं। हमारा झुकाव तो उपन्यास को शब्दों, चित्रों, बिंबों, प्रतीकों और ध्वनियों की व्यवस्था के तौर पर पढ़ने और याद रखने की बजाए क्रियाकलापों, स्थितियों और वातावरण की व्यवस्था के रूप में ज्यादा रहा है और हम कथानक तथा चरित्र जैसे तत्वों को अपरिहार्य मानते हैं।"[iii] उपर्युक्त दोनों उद्धरण क्रमशः कथा भाषा के रचाव और उसके पाठ की समस्याओं की और संकेत करते हैं।

आमतौर पर हिंदी कथा साहित्य का जिस प्रकार भाषा और शिल्प को निपटाया जाता है वह इस प्रकार होता है- भाषा बड़ी सरल और भाव तथा प्रसंगानुकूल है। लेखक बड़ा प्रगतिशील है क्योंकि उसने उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है। मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग देखने लायक है। शिल्प और कथ्य के अनुरूप और नवीन है – इत्यादि।

प्रेमचंद की दलित कहानियों की भाषा इसलिए महत्वपूर्ण है कि एक तरफ हाल के वर्षों में उनकी दलित कहानियों में लोगों की दिलचस्पी बढ़ी है। दूसरी तरफ कुछ दलित आलोचकों ने उनकी कहानियों को दलित विरोधी भी कहा है। उदाहरण के तौर पर अगर हम कफन कहानी को लें तो हम देख पायेंगे कि ये कहानी प्रेमचंद की ईदगाह या पंच परमेश्वर जेसी कहानी से भिन्न है। यह भिन्नता संवेदना, शिल्प और कथा भाषा तीनों ही स्तरों पर है। उनकी रंभिक कहानियाँ जहाँ लघु चरित्रों की महानता की कहानियाँ हैं। जीवन की आस्था का कहानियाँ हैं वहीं उनकी कफन कहानी चरित्रों के पतन और जीवन की अनास्था की कहानी है। उनकी आरंभिक कहानियाँ प्रायः कोई न कोई सुखद चित्र लेकर शुरू होती हैं जबकि यह कहानी एक दुखद चित्र से शुरू होती है। "झोंपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए थे और अंदर जवान बीवी बुधिया प्रसव-वेदना से पछाड़ खा रही थी। रह-रहकर उसके मुँह से ऐसी दिल हिला देने वाली आवाज निकलती थी कि दोनों कलेजा थाम लेते थे। जाड़ों की रात थी।प्रकृति सन्नाटे में डूबी हुई थी। सारा गाँव अंधकार में लय हो गया था।"[iv] यह तो है कहानी का आरंभ और विषय का परिचय। आगे पात्र परिचय देखिए। "चमारों का कुनबा था और सारे गाँव में बदनाम। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम। माधव इतना कामचोर था कि आध घंटे काम करता तो घंटे भर चिलम पीता। इसलिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी। घर में मुट्ठी-भर भी अनाज मौजूद हो तो उनके लिए काम करने की कसम थी।"[v] बुधिया जो कि माधव की पत्नी है और प्रसव पीड़ा से गुजर रही है वह जीवन में उम्मीद और पुरुषार्थ की प्रतीक है लेकिन प्रसव वेदना से उसकी मौत हो जाती है। "माधव का ब्याह पिछले साल हुआ था।जब से यह औरत आयी थी, उसने इस खानदान में व्यवस्था की नींव डाली थी। पिसाई करके या घास छीलकर वह सेर-भर आटे का इंतजाम कर लेती थी और उन दो बेगैरतों का दोजख भरती रही थी। जबसे वह आयी, ये दोनों और भी आलसी और आरामतलब हो गए थे।..... वही औरत आज प्रसव- वेदना से मर रही थी और ये दोनों शायद इसी इंतजार में थे कि वह मर जाए तो आराम करें।"[vi] ये तीनों ही चरित्र ध्यान से देखें तो पता चलता है कि प्रेमचंद की आरंभिक कहानियों में बुधिया जैसे चरित्रों का संघर्ष और उनकी चारित्रिक दृढ़ता को प्रेमचंद ने एक विराट फलक दिया है लेकिन यहाँ स्थिति उलट गयी है। इसलिए बुधिया की मृत्यु एक तरह से उन मूल्यों की भी मृत्यु है जिनका प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में जीवन भर बखान किया था। यह कहानी किसी चरित्र कि कहानी नहीं है बल्कि उस मनोवृत्ति की कहानी है जो धीरे-धीरे अपना पैर फैला रही थी। खुद प्रेमचंद कहते हैं, "जिस समाज में रात-दिन मेहनत करनेवालों की हालत उनकी हालत से बहुत कुछ अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलाताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी। हम तो कहेंगे घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था, जो किसानों के विचारशून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मंडली में जा मिला था।"[vii]

कफन के लिए गाँव वालों से मिले पैसों से वे कफन न खरीदकर शराब पीते हैं। घीसू और माधव के इस चरित्रों को अगर हम दलित जीवन के प्रतिनिधि चरित्र मान लें तो अवश्य ही वह समस्या उठ खड़ी होगी जिसके कारण कुछ लोगों ने प्रेमचंद को दलित विरोधी साबित करने की कोशिश की है। लेकिन हम जानते हैं कि ये कोई चरित्र केन्द्रित कहानी नहीं है। इसका कारण यह है कि प्रेमचंद ने दलित जीवन से भी बड़े महान चरित्रों को प्रस्तुत किया है। घासवाली कहानी की मुलिया हो या ठाकुर का कुँआ कहानी की गंगी। दोनों ही चरित्र दलित जीवन के विश्वसनीय पात्र हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[i] मुहम्मद हसन अस्करी, शीन.काफ. निजाम द्वारा उद्धृत, सामाजिक यथार्थ और कथा भाषा, सं. अज्ञेय पृ. 72 नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-1986

[ii] अज्ञेय, सामाजिक यथार्थ और कथा भाषा, भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-1986

[iii] डेविड लॉज, लैंग्वेज आफ फिक्शन, रूटलेज एंड केगन पाल लंदन 1966 पृ. 17 "We are usually less conscious of a novelist's use of language than of a poet's. We tend to experience and recall a novel, not as a system of words, images, symbols and rounds, but as a system of actions, situations, setting and we continue to find the terms 'plot''and çharacter' indispensible."

[iv] प्रेमचंद, कफन, भारतीय जीवन की दलित कहानियाँ, कल्याणी शिक्षा परिषद दिल्ली, 2011, पृ 146

[v] प्रेमचंद, कफन, भारतीय जीवन की दलित कहानियाँ, कल्याणी शिक्षा परिषद दिल्ली, 2011, पृ 146

[vi] प्रेमचंद, कफन, भारतीय जीवन की दलित कहानियाँ, कल्याणी शिक्षा परिषद दिल्ली, 2011, पृ 147

[vii] प्रेमचंद, कफन, भारतीय जीवन की दलित कहानियाँ, कल्याणी शिक्षा परिषद दिल्ली, 2011, पृ 147-148